लाओ।

बच्चों का भोला सा बचपन बचा कर,
जन्नत सी सुन्दर यह दुनिया बनाओ।

ढाबों पर खाना खिलाते यह बच्चे।
घरों मे पोंचा लगाते यह बच्चे।
कल के ये नाजुक ख्वाब बुझ रहे हैं,
कोठों की रौनक़ बढ़ाते यह बच्चे।

बदनाम गलियों से बचपन बचा कर,
बचपन की बगिया में फिर से सजाओ।
बच्चों का भोला सा बचपन बचा कर,
जन्नत सी सुन्दर यह दुनिया बनाओ।

बचपन अगर मिट जायेगा कल को,
इतिहास जालिम बतायेगा हमको।
अगर बच ना पाया दुनिया में बचपन,
इल्जाम हम पर ही आयेगा कल को।

ठुकरायें बच्चों को गोदी मे लेकर।
ममता की मीठी सी लोरी सुनाओ।
बच्चों का भोला सा बचपन बचा कर,
जन्नत सी सुन्दर यह दुनिया बनाओ।